Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vd 03 30 vçy] 2014 eY; 5 #i;

प्रधान की कलम से

प्रशासनिक सुधार, भ्रष्टाचार उन्मूलन का आधार

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

अक्सर बदनीति, घूस, शातिरतता और नैतिक गिरावट ही भ्रष्टाचार का आधार माना जाता है। विश्व बैंक द्वारा भ्रष्टाचार पब्लिक कार्यो को व्यक्तिगत हितों के लिए प्रयुक्त करना है जो की युग युगांतर से विश्वविख्यात है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में भ्रष्टाचार के ४० नुक्ते वर्णित किए हैं उन्होने उल्लेखनीय ''एशियन धर्म'' में कहा है कि यह हर समाज को दूषित कर रहा है। सरकारी योजनाओं तथा वार्तालापों में इस विषय को दरकिनार किया जाता है। उनका कथन आज भी उतना ही सार्थक है, हमें यह मानना होगा कि भ्रष्टाचार गरीब मजलूम तथा आर्थिक विकास के विरूद्ध तथा देशद्रोह है। दिसंबर २०१२ की ट्रांसपेरैंसी इंटरनैशनल की रिपोर्ट के अनुसार भ्रष्टाचार की सीढ़ी पर भारत विश्व के भ्रष्टतम देशों की ९४वें स्थान पर विराजमान है जबकि चीन जैसा देश भी हमसे ईमानदार है और चीन इस वक्त ८०वें पायदान पर विराजमान है। आज विश्व भारतीय अर्थव्यवस्था को थमी हुई ना अहल जनकल्याण तथा सरकारी कार्यो को भ्रष्टाचारपूर्ण आंक रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में एक अनुमान के अनुसार राष्ट्र में भ्रष्ट तरीकों से एक लाख करोड़ का कालाधन उत्सर्जित हो रहा है जो राष्ट्रीय जी डी पी का ४० प्रतिशत है और समानांतर अर्थ व्यवस्था के रूप में आंका जा रहा है। केवल भ्रष्टाचार के मुद्दे से ही २१वीं सदी में प्रलक्षित भारतीय अर्थ व्यवस्था थम चुकी है। यू एन सी पी की दक्षिण ऐशिया पर मानव संसाधन विभाग की १९९९ की रिपोर्ट अनुसार अगर भारत में भ्रष्टाचार उन्मूलन की ओर बढ़ा जाए तथा स्कैंडेनीशयन राष्ट्रों से नीचे आ जाए तो घरेलू सकत उत्पाद १.५ प्रतिशत बढ़ेगा तथा विदेशी निवेश १२ प्रतिशत तक बढ़ने के आसार हैं। यह चिंतन मनन का विषय है कि भ्रष्टाचार उन्मूलन संभव है? बहुगणना का मत ना में है उनका मानना है कि यह समाज का एक कुस्जित अंग बन चुका है। स्वर्गीय पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी का मानना था कि भ्रष्टाचार विश्वविख्यात है। एक अन्य पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच डी देवगोड़ा ने इसको शूगर रोग से तुलना की है। इस पर अंकुश तो लगाया जा सकता है, उन्मूलन संभव नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए इस व्याधि से समाज को छुटकारा दिलवाने हेतू कमर बांधकर जुटने का आह्वान किया था जिस पर सरकारी भ्रष्टाचार उन्मूलन संस्थाएं पूर्णतया तेजी में भी आई थी। उस वक्त केंद्रीय सतर्कता आयुक्त श्री एन बिठल ने भारतीय चार्टिड एकाउटैंट संस्था, हैदराबाद में एक भाषण में कहा था कि यदि १०० करोड़ भारतीय यह कहें कि भ्रष्टाचार उन्मूलन असंभव तो वे धर्म की सौगंध लेकर ऐसा मानने से इनकार कर देगें। मेरा धर्म भ्रष्टाचार उन्मूलन है जिसके लिए वे कटीबद्ध हैं। हाल ही में न्यायपालिका द्वारा उठाए गए पगों से उदाहरण मिल सकते हैं।

न्यायालयों ने भ्रष्टाचार के मामलों में सतर्कताअन्वेषण पर बल भी दिया है। माननीय जजों की टिप्पणियों ने प्रशासकों को झकझोड़ कर रख दिया। पूर्व प्रधानमंत्री, कई केंद्रीय मंत्री तथा कई पूर्व मुख्यमंत्रियों को सजाएं भी हुई हैं। वर्तमान हवाला कांड, कोयला घोटला, पशुचारा घोटाला , आदर्श हाउसिंग घोटला, २ जी घोटाला, भर्ती कांड, खान माफिया घोटाला, काम्नवेल्थ खेलों में घोटाला जैसे अनगिनत घोटालों को न्यायिक प्रक्रिया ने उजागर कर राजनेताओं- प्रशासकों तथा कार्यकारिणी की मिलीभगत को विभिन्न प्रकार से हर स्तर पर नंगा किया है। एक अमेरिकी विश्व वित्तीय संस्था के अनुमान के अनुसार भारत को कर चोरी से ४६२ बिलियन डालर का नुकसान वर्ष १९४८ से २००८ तक हुआ है। बीबीसी की रिपोर्टर गीता पांडे ने रिपोर्ट किया है कि ''काम के बदले अनाज'' जो स्कूली बच्चों को वितरित किया जाना था, में ही केवल उत्तर प्रदेश में ४२.६ बिलियन डालर का नुकसान हुआ है। यह अनाज ब्लैक में सरहद पार बंगलादेश तथा नेपाल को बेच दिया गया। राष्ट्रीय सर्वोच्च संस्था ने मानव संसाधनों की कमी का रोना रोते हुए इससे पल्ला झाड़ लिया क्योंकि इस पर कार्यवाही हेतू ५० हजार एफ आई आर लिखनी पड़ती।

इसके अतिरिक्त राजनीति में अपराध के तथ्य इससे भी चौंकाने वाले हैं। एशीयन मानवाधिकार आयोग की ५ दिसंबर २०१० की रिपोर्ट के अनुसार १५२ सांसदों जिनमें ७२ जघन्य अपराधें में संलिप्त हैं के विरूद्ध अपराधिक मामले दर्ज किए गए। एक अनुमान के अनुसार १४५६ लाख करोड़ रूपये विदेशी बैकों में जमा करवाए गए। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश सेवा निवृत के जी बालकृष्णन तथा वाई के सभ्रवाल के साथी उच्च न्यायालयों में कार्यरत दो न्यायधीशों दकलकता तथा मद्रासड्ड पर अपनी शक्तियों का दुरूपयोग के केस दर्ज हुए जिससे सिद्ध होता है कि

शेष पेज 2 पर

'k"k i`t&1

न्यायधीशों की नियुक्तियों की प्रक्रिया तथा दायित्वों में भी बदलाव की जरूरत है। न्यायालयों की शक्तियों तथा गणना में बढोतरी भी आवश्यक है। ट्रांसपैरेंसी इंटरनैशनल के अनुसार भातीय पुलिस भ्रष्टतम संस्था है। यु एन रिपोर्ट में कहा कि भारतीय पुलिस गरीबों से पैसा ऐंठने हेतू ''थर्ड डिग्री'' तक इस्तेमाल करती है। यह भी एक तथ्य है कि भ्रष्टाचार की लड़ाई अकेले नहीं लड़ी जा सकती। सी वी सी , सी बी आई, राजकीय सतर्कता ज़्यूरौ, जन लोकपाल, राजकीय लोकायुक्त भी इसके लिए अप्रयाप्त होगें ज़्योंकि इनके पास दंडित करने की शक्तियां नहीं है और अपराधी भारतीय कानून की प्रक्रिया को उलझाने में दक्ष हो चुके हैं। इस पुनित कार्य में समाज की संलिप्तता हर स्तर पर जरूरी है। सभी देशवासियों को 'जीरो टालरेंस' के पावन यज्ञ में भागीदार बनना होगा। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश के टी थामस तथा आर पी सेथिया ने मध्य प्रदेश सरकार तथा राम सिंह 2000 के केस में 784 पृष्ठों की रिपोर्ट में टिप्पणी की है कि ''सज़्मानित समाज में भ्रष्टाचार कैंसर की तरह है इसका समय रहते निवारण ना करने से परिणाम घोर हो सकते हैं तथा यह दावानल जंगल आग की तरह फैल जाएगा। यह विषाणू एच आई वी से एडस तक में बदलने में देर नहीं लगेगी। यह राजवंशी चोरी के समान है। सामाजिक राजनैतिक सिस्टम अपने ही बोझ तले दब कर रह जाएगा। यह समाज विरोधी है तथा समाज के आर्थिक व राजनीतिक गारिमापूर्ण स्वास्थ्य तथा प्रभावी सिस्टम को ले डूबेगा। कोई भी प्रभावी पग उठाने से पूर्व देखना, सोचना समझना होगा कि इस व्याधी से छुटकारा पाने के लिए कैसे प्रभावी पग उठाए जा सके। अब तक पांच तथ्य कारण उभर कर सामने आए हैं :-

वस्तुओं तथा सेवाओं की कमी, लालफीताशाही, उलझन भरे अधिनियम तथा जटिल प्रक्रिया, जन कार्यालयों में पारदर्शिता की कमी। भ्रष्ट कर्मी को कानून, जात बिरादरी, क्षेत्रीयता का सहारा तथा जब तक प्रमाणित ना हो जाए, कोई अपराधी नहीं कहलाता। इसीलिए कहावत बनी है कि चोर की तरह बेशर्म ना कि नैतिकता की दुहाई देता ईमानदार।

ज़्या भ्रष्टाचार उन्मूलन संभव है। मैरा मानना है कि कुछ भी असंभव नहीं है। जन जागरण इसकी प्रथम कड़ी होगा। यह तथ्य सर्वव्याप्त होता है जब 31 अक्तूबर को सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर सतर्कता जन जागरण सप्ताह मनाया जाता है। वे भारतीय मान्यताओं तथा उच्च स्वस्थ प्रशासन के प्रतीक थे। समाज भ्रष्टाचार को मान्यता निरर्थक रूप में दे रहा है जैसे एक खिलाड़ी खेलने से पूर्व हार मान रहा हो। कदम बढ़ाए सफलता मिलेगी। करत-करत अज़्यास के जड़मत होत सुजान। हमें मानना होगा कि गुनाहगार को गुनाह की सजा देने में देरी, प्रभावी सजा में कमी, विभागीय शिथिलता, राष्ट्र की सर्वोच्च संस्था सी बी आई, सी वी सी आदि में सरकारी हस्तक्षेप इत्यादि ही मुज़्य कारण बनते हैं। गुनाह साबित करने में विभागीय अन्वेषण तथा न्यायिक प्रक्रिया दो ही रास्ते हैं और दोनों अज़्सर लंबे, जटिल और उबाऊ व राजनैतिक दबाव में काम करते हैं जिस कारण सजा में परिणिती केवल 6 प्रतिशत है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन अधिनियम 1947 के बाद 1998 में संशोधित किया गया। इस संशोधन के बाद भी कुछ सीमाएं हैं। यह केवल जन सेवकों तक सीमित है जबकि भ्रष्टाचार अपनी जड़ें समाज-राजनैतिक स्तर पर फैला चुका है जिससे हमारे नैतिक स्तर में भी गिरावट आ चुकी है। क्रिकेट जैसे खेल में नूरा मैच हो रहे हैं तथा न्याय मंत्रालय किसी भी कार्यवाही में अपनी असमर्थतता व्यक्त कर रहा है जबकि जन भावना अपराधियों पर कार्यवाही करने तथा सज़्त कानून बनाने हेतू संशोधन के लिए आतुर है। आज वादी बुरी तरह से आहत है ज़्योंकि न्यायालयों में फरियाद तथ केसों की बढोतरी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं उतना ही वादी अपना विश्वास व धैर्य खो रहे हैं इसीलिए समय की पुकार है कि हम स्तर पर बढ चढ कर काम करें तभी राष्ट्र का कल्याण संज़्व है और इसी से जनता का विश्वास न्यायिक प्रक्रिया में स्थापित हो सकेगा।

आज हर कोई प्रशासनिक सुधार की मांग कर रहा है ताकि आज समाज में व्याप्त कर दाताओं के धन के दुरूपयोग पर अंकुश लगाया जा सके। घिसे पिटे और काम ना आने वाले या अक्षम अधिकारियों को बदलने की जरूरत है ताकि जन कार्यो में पारदर्शिता लाई जा सके और समाज को भ्रष्टाचार रूपी विषाणू से मुक्ति दिलवाई जा सके। हमें ई-गर्वनैंस पर बल देना होगा। चुनावों में काले धन पर अंकुश लगाने हेतू चुनाव प्रक्रिया में सुधार आज अति आवश्यक है। इसके साथ-साथ अन्वेषण संस्थाओं जैसे पुलिस सी बी आई, सी वी सी, राजाकीय सतर्कता ज्यूरो तथा केंद्रीय इन्फोर्समैंट निदेशालय में राजनैतिक दखल अंदाजी दूर करने हेतू सक्षम पग उठाने की नितांत आवश्यकता है। सर्वोच्च न्याय द्वारा वर्ष 2006 में सुझाए गए पुलिस सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू करने की नितांत आवश्यकता है। पुलिस में दक्षता, प्रभावी अन्वेषण, आधुनीकीकरण विषयों में बजट के वक्त एक योजनात्मक विषय के रूप में स्वीकारना होगा। थाना स्तर तक फंड वितरण दिन प्रति दिन जरूरत अनुसार आंबटित होने चाहिए। यह अचंभित करने वाला तथ्य है कि थाना या चौकी स्तर पर लावारिस शवों के अंतिम संस्कार, जन सत्कार तथा स्टेशनरी इत्यादि हेतू धन जनता से डरा धमका कर या दबाव से ही ग्रहण किया जाता है ज़्योंकि बजट में इसके लिए प्रावधान ही नहीं है।

आप हम सब मिलकर भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतू एकजुट होकर कार्य करें तथा एक स्वस्थ समाज का निर्माण करें और भारत को पुनः सोने की चिड़िया बनाने में भागीदार बनें।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

चाहे समस्त भेदभाव समाप्त हो चुका हो फिर भी हे नाथ मैं आप का हूँ, न कि आप मेरे। लहर समुद्र की होती है समुद्र लहर का नहीं। –शंकराचार्य

आरक्षण के महासागर में एक जिन्दा कौम की जीत

Mk- Kku çdk'k fiyfu;k ¼lkln½

आखिर, एक जिन्दा कौम की जीत हुई। नौ राज्यों (हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, राजस्थान) के जाटों को केन्द्रीय ओ बी सी (अन्य पिछड़ा वर्ग) सूची में शामिल किया जाने की पुष्टि करते हुए गजट अधिसूचना प्रकाशित कर दी गई। अधिसूचना का प्रकाशन चुनाव आयोग की आचार संहिता के चुनाव घोषणा के साथ ही लागू होने से एक दिल पहले 04.03.2014 को कर दिया गया। रविवार (02.03.2014) को केन्द्रय कांग्रेस सरकार ने आपतकालीन बैठक कर जाटों को आरक्षण देने का फैसला लिया था। जहां तक राजस्थान का प्रश्न है, केवल दो जिलों – भरतपुर तथा धौलपुर के जाटों के अलावा अन्य सभी जिलों के जाट पहले ही, 10.10.1999 से, आरक्षण सूची में थे। अधिसूचना में अब इन दोनों जिलों के जाटों को भी शामिल कर लिया गया है। पंजाब के जाटों को भी चुनावों से ठीक पहले राज्य के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने आरक्षण दे दिया। परन्तु उन्हें केन्द्र में अभी आरक्षण नहीं मिला है। जाट समाज के लिए यह एक जश्न का अवसर है।

इस उपलब्धि का श्रेय जाट कौम के जीवट और संघर्ष को जाता है। बिरादरी के राजपुरूषों में वयोवृद्ध भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, केन्द्रीय मंत्री चौधरी अजीत सिंह की रहनुमाई, सक्रियता एवं जिजीविशा का इस कामयाबी में अतुलनीय योगदान रहा। सभी जाट आरक्षण संघर्ष समितियों, जाट सभाओं एवं सर्व जाट खापों ने जाटों को केन्द्र में ओ. बी.सी. (आरक्षण) लेने हेतु अपना–अपना यथोचित योगदान दिया है। कर्नल ओ.पी. सिन्धु, कमांडेट हवासिंह सांगवान, एच.पी.एस. परिहार, यशपाल मलिक आदि इस महासमर में हरावल में रहे। समाज की विभिन्न पत्रिकाओं ने आरक्षण की मशाल को जलाए रखा। जाट बिरादरी के आम अनपढ़ गरीब 'आम किसान' का योगदान सर्वोपरि है, क्योकि वह धीरज के साथ संघर्ष करता रहा है। उसका, अपने नेताओं में विश्वास अडिग रहा इस आरक्षण की महाभारत का असली महारथी आम जाट ही है, जो कभी श्रेय लेने की होड़ में नहीं रहता लेकिन कुर्बानी देने के लिए हरदम तैयार रहता है।

अन्य पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने केलिए भारत सरकार ने 29 जनवरी 1953 को संविधान की धारा 340 के तहत काका केलकर की अध्यक्षता में एक कमीशन गठित किया जिसने 20 मार्च 1955 को अपनी रिर्पोट सरकार को पेश की। इसके बाद भारत सरकार ने 01 जनवरी 1979 को दूसरा आयोग बी.पी. मण्डल की अध्यक्षता में गठित किया जिसने 31 दिंसबर 1980 को अपनी रिपार्ट सरकार के समक्ष पेश की। लम्बे समय के बाद मण्डल कमीशन की रिपार्ट को तत्कालीन प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह की सरकार द्वारा 13 अगस्त 1990 को लागू किया गया। मण्डल कमीशन ने पिछड़ी जातियों की पहचान के लिए धारा 15 (4) के तहत केवल दो शर्तो – सामाजिक पिछड़ापन तथा शैक्षणिक पिछड़ेपन को आधार माना। मण्डल आयोग ने बिना किसी सर्वे के सैकड़ों कृषक, दस्तकार, कामगार जातियों को उनकी सामाजिक स्थिति को मद्दे नजर रखते हुए पिछड़े वर्ग में आरक्षण की व्यवस्था कर उनके लिए नौकरियों के साथ–साथ अन्य सुविधाओं का पिटारा खोल दिया। मण्डल आयोग ने जाटों को भी आरक्षण देने की सिफारिश की थी। आयोग की सिफारिश पेज सख्या 294 पर इस बात को स्पष्ट किया गया है कि जाट जाति भी अहिर, गुर्जर, सैनी, लोघ, कुर्मी, की तरह पिछड़ी जाति है एवं आरक्षण की अधिकारी है लेकिन जाट कौम के स्वाभिमानी लोग अपने आप को पिछड़ा कहलाने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं है और उन्होंने अपने को पिछड़ा कहलाकर आरक्षण की सुविधा लेने से मना कर दिया है। समस्त जातियों अहिर, गुर्जर, सैनी, लोहार, खाती ने इसका लाभ उठा कर खूब मलाई खाई। अपनी ऊंची नाक वाले लोगों की भूल को आज का जाट युवा परिवार भुगत रहा है। लम्हों ने गलती की थी सदियों ने सजा भुगती परिणामतः जो आरक्षण जाट समाजको सामान्यताः 13.08.1990 को मिलना चाहिये था वह 04.03.2014 को एक लम्बें संघर्ष के बाद मिला। हम 23 साल पिछड़ गए।

मरूभूमि राजस्थान के जाटों को भी ओ.बी.सी. आरक्षण के लिए एक लम्बा धर्मयुद्ध लड़ना पड़ा था। यह आर–पार की लड़ाई थी। ज्ञातव्य है कि सन् 1907 में किसान जागरण के लिए शहिदे आजादी भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह ने 'पगड़ी सम्भाल जट्टा' का नारा दिया। राजस्थान में, जाट ओ.बी.सी. (आरक्षण) के लिए संघर्ष में भी, इसी नारे ने सफलता दिलाई। अनपढ़, गरीब रेगिस्तान के जाट ने एक जुट होकर, अपनी पगड़ी की आन–बान के लिए, एक साथ निश्चय किया, 'जीना है, तो मरना सीखो।' 'जो देखी हिस्टरी तो कामिल यकीं आया। जिसे मरना नहीं आया, उसे जीना नहीं आया।' सफलता के तीन संबल बने – यह भरोसा कि वह जो कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं, यह संकल्प कि वह अनन्तकाल तक संघर्ष करते रहेंगे, और यह निश्चय कि अपनी जीत अवश्य होगी। आखिर, जूझने, भिड़ जाने व अभावों में जीवन जीने की आस्था एवं संकल्प की प्रवृति का नाम ही जाट है। संघर्ष उसकी नियति में हैं। अंतिम जिहाद के लिए, एक जय–घोष चुना गया – 'एको, चेतो, खुड़कों'। अर्थात, संगठित बनें, अपने अधिकार के लिए चेतना जागृत करें और हक लिए संघर्ष करें।

राजस्थान में अशोक गहलोत की कांग्रेस सरकार, जाट समाज की न्यायोचित मांग की लगातार अनदेखी करती रही परन्तु भाजपा ने हवा के रूख को पहचाना। अटल बिहारी वाजपेयी ने आश्वस्त किया कि जाटों को उनका 'हक' मिलेगा। जाटों की स्वभाविक प्रतिक्रिया थी कि जो हमें आरक्षण देगा, उसी को हमारा वोट मिलेगा। 12.10.1999 को केन्द्र में एनडीए (राजग) की सरकार बनी। वाजपेयी जी ने वादा निभाते हुए, 20.10.1999 को, राजस्थान (भरतपुर, धौलपुर को छोड़कर) के जाट समाज को केन्द्र में, अन्य पिछड़ा वर्ग में आरक्षण दे दिया। आखिर, राज्य की कांग्रेस सरकार को भी समझ आई और उसने भी 21.10.1999 को समस्त जाटों को राज्य में आरक्षण दे दिया। इस प्रकार, एक संघर्षशील जिन्दा कौम की 'हक' के धर्मयुद्ध में जीत हुई।

किसान बिरादरी के प्रेरणा–स्रोत, रहबरे–आजम छोटूराम, जाट समाज की विशाल जन–सभाओं को सम्बोधित करते समय, भर्तहरि के नीतिषतक के निम्न श्लोक को हमेशा उद्धृत करते थेः– 'परिवर्तिनि संसारे मश्तः को वा न जायते। सजाते येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।' अर्थात् – परिवर्तशील संसार में जन्म व मृत्यु होते रहे हैं। जन्म व जीवन उसका ही सार्थक होता है जो सद्कर्मों से अपनी कौम को उन्नत कर जाता है। वास्तव में, जो कौम का नहीं,

वह काम का नही। जो जात का नहीं वह बात का नहीं। जो कास्त का नहीं, वह राष्ट्र का नहीं। परन्तु राष्ट्र प्रथम है, सर्वोपरि है। इसलिए आज कौम के युवाओं का आह्वान है, ';g ftUnxh g dke dh] r dke ij yVk, tkA'

दीनबन्धु सर छोटूराम, किसानों का आत्मविश्वास जागृत करने के लिए उत्प्रेरित करते हुए, बहुधा डॉ. इकबाल का निम्न शेर उद्धृत करते थेः– 'खुदी का कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुद बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।' किसान मसीहा छोटूराम, किसान को अपने में छूपे सिंह की दहाड़ सुनाने के लिए उत्साहित करते थे। उनका मुर्दों में जान फूंकने वाला उद्‌बोधन था – "ऐ किसान, तू ऐसा न समझ कि तू कुछ भी नहीं है। तेरे भीतर पहाड़ की मजबूती छिपी है, बाढ़ की ताकत छिपी है, नदी का वेग छिपा है और सूरज का प्रकाश छिपा है – तू ही पीर और मुरीद, गुरू और चेला, मालिक और बंदा, स्वामी और दास, शासक–शासित सब कुछ है, पर तेरी हीन भावना और हीन विचारों ने तेरा बेड़ा गर्क कर रखा है। तू जाग, उठ आवाज बुलन्द कर और हुकांर भर। मैं तुझे बेचारा नहीं रहने दूंगा।" उनके इस उद्‌बोधन को आज आत्मसात करने की आवश्यकता है। बकौल इकबाल, – 'गुलामी में काम आती हैं तदबीरें न शमशीरें, गर हो यकीं कामिल तो कट जाती हैं जंजीरें।'

'हे मेरे जाट भाई, मेरी दो बात मान ले, पहली–बोलना ले सीख, दूजी–दुश्मन को ले पहचान।' ये बात दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम ने अपने जीवन में बार–बार दोहराई। 'बोलना ले सीख' से उनका अभिप्राय था कि जाट कौम अपने अधिकार के लिए बोलना शुरू करे, गूंगा बनकर रहने से उसकी किसी समस्या का हल नहीं है। यदि हम अपने अधिकारों की मांग नहीं करते हैं तो अपने वाली हमारी पीढ़ीयां हमें कायर कहेंगी। विकास की दौड़ में गूंगी कौम हमेशा पिछड़ जाती हैं और दूसरे लोग उनका कहना था कि हमें भी मंच मिले अपनी आवाज को बुलन्द करके अपने अधिकारों के लिए हुंकार भरनी होगी। गर्जना करके सत्ता और शोषक को बताना होगा कि हम अपने–अधिकारों के लिए जागरूक हैं। यदि हमारे अधिकारों का अतिक्रमण हुआ तो हम चुप रहने वाले नहीं हैं और हम अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना जानते हैं। जब हम बोलना सीख गये तो साथ–साथ अपने दुश्मन की पहचान भी करनी होगी जो हमारे हितों और अधिकारों का हनन कर रहा है। हमें जानना होगा कि कौन वर्ग और जाति हमारा शोषण कर रही है। अपने व परायों को पहचानना सीखो। हक के लिए बोलना सीखों। देखो कि कौम–कौम की बात करता है और कौम–कौम को बेचता है। चेहरों की बजाए कौम की किस्मत पर नजर डालो।

दूसरों के लिए लडना, मरना, खपना, दूसरों के भरण–पोषण के लिए अन्न पैदा करना, दूसरों की रक्षा के लिए देश की सरहदों पर सिर कटवाना, और दूसरों की आग में अपने आप को स्वाहा करना, जाट का स्वभाव है। धोखा देना, बेईमानी करना, न इसके स्वभाव में है, न इसे आती है। फिर जाट गिडगिडाने वाली भाषा क्यों बोलें? दूसरों की दरी बिछाने की बजाए खुद लीडर बनो। यह घोर विडम्बना है कि हरित क्रान्ति की सारी कमाई दलाल व बिचौलिए खा गए और जाट किसान के हाथ केवल कर्जा और आत्महत्या आए। जो कौम सभी देशवासियों का पेट भरती रही और सुरक्षा भी करती रही, आज वह अपने अस्तित्व के लिए भी चिंतित है।

आज जाट कौम, राष्ट्र के लिए सर्वाधिक खून–पसीना बहाने वाली कमेरी कौम, की पहली बार, राष्ट्रीय स्तर पर कोई आवाज पहचान नहीं है। आज, जाट समाज, सियासत में पिछड़ रहा है। आज उसे अपने अस्तित्व व वजूद की रक्षा के लिए रण क्षेत्र में उतरना ही चाहिए। आज, वक्त का तकाजा है कि हम संगठित हों, सोचें, समझे व कुछ करें। जो सिर्फ सोचते है करते नहीं, वे इतिहास के रथ के क्रूर पहियों से कुचल दिए जाते हैं। इतिहास का रथ वह हांकता है जो सोचे हुए को पूरा करता है। अब कुछ कर गुजरने का वक्त सिर पर आ चुका है। हम अपनी नस्लों के लिए अपना हक, हासिल करने को, राजसत्ता पर कब्जा करें, नहीं तो आने वाली पीढ़ियां हमसे पूछेगी कि हमने उनके लिए क्या किया। आज, चुप न रहो, अपनी आवाज बुलंद करो, हक के लिए लड़ो। 'खामोश मिजाजी, तुम्हें जीने नहीं देगी। इस दौर में जीना है तो कोहराम मचादो।'

डॉ. इकबाल का कहना है कि जाट की सच्चाई के कारण उसके जवान बेटों की नजरें आसमान की ओर उठी रहती हैं, उनकी गर्दन कभी नहीं झुकती। डॉ. इकबाल ने जाट को 'मर्दे मोमिन' कहा है, यानी आस्तिक मर्द और बताया कि जब वे आत्मविश्वास में भरकर अपनी मंजिल को निहारते हैं तो उनकी तकदीरें भी बुलंद हो जाती है। उनके बाजुओं के दम–खम का कोई अनुमान नहीं लगा सकता। 'कौन अंदाजा कर सकता है भला उसके जोरे–बाजे का, निगाहे मर्द मोमिन से बदल जाती हैं तकदीरें जाट कौम की हस्ती मिटाए से भी नहीं मिटती।'

इसीलिए डॉ. इकबाल कहते हैंः 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमांना हमारा। यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकी नामो निषां हमारा।' जाट का रखवाला राम है। सांच को आंच नहीं। जाट, अपने असूलों, ईमानदारी और मेहनत पर कायम रहे तो कोई भी उसका बाल बांका नहीं कर सकता, क्योंकिः– 'फानूस बनकर जिसकी हिफाजत हवा करे, उस शमां को कौन बुझा सके जिसे रोशन खुदा करे।' आज, आपसी मनमुटाव को भुलाकर, एक होने की जरूरत है। जो बंट गया, वो घट गया। उठो! जागो और ध्येय को प्राप्त करो।

जिस कौम को अपने इतिहास का ज्ञान न हो, अपने महापुरूषों पर अभिमान न हो और जिसकी नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति का भान न हो, उस कौम का पतन होना निश्चित है। यही सब आज जाट कौम में व्याप्त है, जो हर जगह दिखाई पड़ रहा है। जिस कौम को अपने अधिकारों का ज्ञान न हो, अपनी ताकत का आभास न हो, संघर्श करने की नीयत न हो, अपनी ताकत का आभास न हो, और अपने आपको समय के साथ परिवर्तित करने की जागरूकता न हो, उसका पतन होना निष्चित है। दलित मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने समाज को मुक्ति एवं उत्थान के तीन सूत्र दिए थे। शिक्षित बनो, संगठित बनो और अपने हक के लिए संघर्ष करो। ये तीन सूत्र ही हर कौम की तरक्की के लिए महामं हैं। शिक्षा बिना, अपने अधिकारों का बोध नहीं। शिक्षा के बिना चेतना नहीं। बिना चेतना के संगठन नहीं। संगठन के बिना शक्ति नहीं। शक्ति के बिना संघर्ष के लिए ऊर्जा नहीं। संघर्ष के बिना हक की प्राप्ति नहीं। शिक्षा, विशेषकर महिला शिक्षा, उन्नति का मूल है। बेटे–बेटियों को पढ़ाओ। ज्ञान–यज्ञ की मशाल जलाओ। समाज सुधार की अलख जगाओ। चेतना की रणभेरी बनाओ।

'है वही सूरमा इस जग में जो अपनी राह बनाता है। कोई चलता है पद चिन्हों पर, कोई पद चिन्ह बनाता है।'

स्वतंत्र भारत में चौ. छोटूराम किसान राज लाना चाहते थे

–सूरजभान दहिया

खेती, किसान और खेतीहर मजदूरों की समस्याओं पर सोचने की आदत भारत में कम है। शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी प्रकार के विकास का रास्ता रोटी की जरूरत पूरी होने पर ही प्रशस्त होता है। अत एवं किसान की उपेक्षा अथवा उसका शोषण देश में संकट उत्पन्न कर देता है। बीसवीं सदी के पूर्वाध में जिन युग–पुरूषों ने किसानों के हितों की रक्षा के लिए युगांतकारी कदम उठाये, उनमें दीनबंधु–छोटूराम का नाम सबसे पहले आता है। उनकी विचारधारा में गांधीवाद व प्रजातंत्रवाद की झलक थी। वे शारीरिक रूप से गढ़ी सांपला में अवतरित हुये परंतु राजनीतिक रूप से वे रोहतक से उठे जहां से किसान के शोषण के विरूद्ध जेहाद छेड़ा। आज दीनबंधु छोटूराम की परलोक सिधारे कोई 69 बरस बीत गये, फिर भी किसान के अन्तःकरण में वे सदैव जीवित रहते है। आज किसान जिस संकट से गुजर रहा है उससे मुक्ति पाने के लिये किसान को चौ. छोटूराम के वारिस की तलाश है। किसान पटल पर हरी पगड़ी, पीली पगड़ी व गुलाबी पगड़ी बार–बार नजर आ रही है पर छोटूराम की जमीननुमा मटियाली पगड़ी क्यों नजर नहीं आती जो किसान पीड़ा को समझे और किसान को मनुष्य की तरह जीने का अधिकार दिलवाये। छोटूराम जी की शख्सियत बड़ी ताकतवर थी, बड़ी मजबूत थी। जोखिम उठाने की आदत उनके व्यक्तित्व में थी तथा उन्हें डंके की चोट पर काम करने की शक्ति थी। धर्मान्माद के बचाने के लिए वे जिन्ना से भिड़े, झूके नहीं, गेंहू की किमत पर वे वायसराय से टकराये, अडिग रहे, राजनीति में अनेक राजनेताओं से टक्कर ली अपने मिशन पर चलते रहे, उनमें एक साथ अगाध समुद्र भी था और महान हिमालय भी। उनका पूरा जीवन निर्बाध चेतना–प्रवाह की ऐसी अंर्तकथा है जो अवरोधी को समेटती हुई अनवरत ग्रामीण विकासोन्मुखी रही। उनके जीवन का एक चुनौती भरा लक्ष्य था – शोषित ग्रामीण समाज को लोकतंत्र के माध्यम से राहत दिलाना। उन्होंने इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु आंधियों को ललकारा, डटे रहे, अकेले पड़ गये पर अविचलित रहे क्योंकि उनमें वैचारिक गहनता, स्पष्टता और तटस्ता थी– उदार योद्धा सी। आज उनके सम्पूर्ण जीवन पर गहरा अध्ययन हो रहा है और उनके व्यक्तित्व को ठीक से जानने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। 23–24 फरवरी 2013 को दो दिवसीय लाहौर में साहित्य सम्मेलन हुआ था। इसके एक सेशन में 'पाकिस्तानः एक आधुनिक देश' विषय पर चर्चा हुई थी। इसमें इतिहासकार आयशाजलाल, ब्रिटिश विद्वान फ्रांनसिस रोबिनसन, बी.बी.सी. के ओवन बैनैट जान्स तथा ब्रिटिश पाकिस्तानी लेखक तारिक अली ने अपने विचार रखे थे। विषय का प्रारम्भ करते हुये अली ने कहा कि पाकिस्तान का बनना जिस क्षेत्र में आज इसका अस्तित्व है कभी भी ज्वलंत मुद्दा नहीं बन पाया जब तक रहबरे आजम छोटूराम जैसा व्यक्तित्व वहां जिन्दा रहा। यदि आज पाकिस्तान या भारत में पाकिस्तान बनना या भारत के बंटवारे में 1947 से पूर्व जन्में लोगों से पूछा जाये तो वे सभी इसे ट्रैजडी कहेंगें। पाकिस्तान से आये और गुड़गाँव में बसे एक सज्जन ने मुझे अभी कुछ समय पूर्व बताया कि हम लाहौर में जिसमें महिलायें भी होती थी छोटूराम के विरूद्ध प्रभात फेरियां निकालते थे और जोर–जोर से कहते थे – ''ओ केहड़ी माई, जिसनूँ जन्मा छोटूराम कसाई।'' परंतु आज वह महानुभाव स्वीकार करता है कि ''चौ. छोटूराम वास्तव में हमारे हितैषी थे, वे जिवित रहते तो कदाचित पाकिस्तान न बनता। इजरायलियों ने पता है, मुहाजिरों को पता है, हम रिफ्यूजियों को पता है, उन बांगलादेशियों को पता है कि अपनी मातृभूमि से खदेड़े जाना कितना पीड़ादायक होता है पर इससे दुखदायक अनुभव यह है कि आप लोगों ने चौ. छोटूराम को उतना सम्मान नहीं दिया जितना दिया जाना चाहिये था। उनके जनम स्थान गढ़ी सांपला को तीर्थ स्थान के रूप में विकसित होना चाहिये था।'' जिन्ना ने भी अन्तिम क्षणों में स्वीकार किया था कि ''धर्म के उन्माद से राज्य तो बनाया जा सकता है, पर चलाया नहीं जा सकता। यूनियनिस्ट पार्टी माडल एक मात्र रास्ता है जिससे पाकिस्तान आगे बढ़ सकता है। यदि मुझे नेहरू से मिलने का अब अवसर मिले तो मैं अपनी गलती को उनके समक्ष स्वीकार कर लूंगा। निः संदेह चौ. छोटूराम की जनता में आज भी दृढ़ आस्था बनी हुई है।''

सन् 1900 ई. में लार्ड कर्जन अपनी राजस्व व कृषि रिपोर्ट में इग्लैंड को अवगत कराया गया था कि ''भारत में विशेषकर पंजाब में कृषि भूमि किसानों से गैर–कृषि किसानों को बड़ी तेजी से स्थानान्तरण हो रहा है जिससे यहां सामाजिक एवं राजनैतिक संतुलन बिगड़ रहा है और एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो सकती है।'' इस रिपोर्ट के पश्चात भारत में लैंड–एलिनेशन एक्ट – 1901 प्रभावी हुआ, परंतु यह एक्ट किसान को पर्याप्त राहत नहीं दे सका। जब पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार बनी तो दीनबंधु छोटूराम ने पंजाब में कोई 35 कानून बनवाये जिससे किसान को शोषण से मुक्ति मिली। रिश्टिच्युशन आफ मोर्टगोज्ड एक्ट – 1938 के लागू होने से कोई 3,65,000 किसानों का 83,5000 एकड़ भूमि वापिस मिली जिससे किसानों ने नये सूरज का उदय होते देखा। इस प्रकार के क्रान्तिकारी कदमों से छोटूराम को रहबरे–आजम के रूप में सम्मान मिला। यदि आज के

कवि और चित्रकार मैं भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का रंग भरता है। – अज्ञात

संदर्भ में इस स्थिति का अवलोकन किया जाये तो हरियाणा में बड़े पैमाने पर किसानों की जमीन हडपी जा रही है और एक राजनैतिक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो रही है। सन् 1981 से 30419 एकड़ कृषि भूमि किसानों से ली जा चुकी है। सन् 2005 से अब तक कोई 22000 एकड़ भूमि बिल्डरज को कौडियों के भाव दे दी गई है। इससे किसान समुदाय में काफी असंतोष है।

चौ. छोटूराम ने किसानों भू–रक्षा प्रदान करने के साथ–साथ कृषि विकास के लिये अनेक कार्यक्रम लागू किये। उन्होंने किसानों को उन्नत बीज उपलब्ध कराने के लिये लायलपुर कृषि कालेज में डा. रामधन सिंह कृषि वैज्ञानिक को उन्नत बीज विकसित करने का दायित्व सौंपा। डा. रामधनसिंह ने 8 गेंहू की, 8 उद्यान की, 6 जौ की और 3 दालों की उन्नत किस्म उन्नत करके कृषि अनुसंधान और पंजाब में कृषि उत्पादन में अभुतपूर्व वृद्धि की जिससे वे निक्का (छोटा) छोटूराम के रूप में लोकप्रिय हुए। चौ. छोटूराम ने स्वंय 1928 से भाखड़ा परियोजना को क्रियावयन में अन्ततः सफल हुये। उन्होंने कनाल कलायिना स्थापित करके पंजाब में कृषि फार्म माडल का श्री गणेश किया। जब स्वतंत्रता के पश्चात भारत में हरित क्रान्ति आई तो डा. एम.एस. के अग्रदूत तो चौ. छोटूराम और निक्का छोटूराम थे।

चौ. छोटूराम ने पंजाब में यूनियननिस्ट पार्टी स्थापित करके तथा किसान कल्याण कार्यक्रम लागू करके उपेक्षित किसान को सशक्त राजनीतिक वर्ग बना दिया। उन्होंने 1944 में मुलतान में थेरी जनसमूहों कों संबोधित करते हुए कहा था कि ''आज पंजाब में किसान राज्य है। भारत को शीघ्र स्वाधीनता मिल जाएगी और हम पंजाब अनुभव सम्पूर्ण भारत में क्रियान्वयन करके किसान राज्य स्थापित करेंगें।'' दुर्भाग्यवश वे 9 जनवरी 1945 को परलोक सिधार गये और भारत में किसान राज लाने का उनका स्वप्न अधूरा रह गया।

जाट समाज का विकास

राकेश सरोहा

जाट जाति एक आदिकालीन जाति है तथा इसका इतिहास बड़ा गौरवशाली है। इस जाति में अनेक अनुपम विशेषतायें है जिसके कारण समस्त विश्व में इस जाति की एक अलग पहचान रही है तथा इसकी सामाजिक सरचंना भी असाधारण है। इस जाति के लोगों के प्रमुख गुणों, विशिष्ट आदतों और व्यवहार, सादगी, उच्च चरित्र, नैतिक आचारण, भोलापन, वीरता, सच्चाई, धीरता, त्याग व बलिदान की भावदाओं के कारण ही जाटों को जाट देवता कहा गया है। खेतों में मेहतन करने वाले व युद्ध भूमि में खुन बहाने वाले जाट जाति के लोगा बड़े भोले व स्पष्टवादी है परन्तु वर्तमान समय में आधुनिक युग की पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण आज समस्त भारतीय समाज विकास की सफलता प्राप्त करने के लिए भ्रष्टाचार व बेईमानी के दलदल में फंसता जा रहा है तथा गलत रास्तों का प्रयोग करके विकास करना चाहता है जिसके कारण सच्चे, स्पष्टवादी तथा मेहनती व्यक्ति विकास के मामले में पिछड़ते जा रहे हैं। जाट समाज के लोग भी अपनी स्पष्टवादिता तथा अन्य गुणों के कारण आज के विकासशील युग में पिछड़ रहे है। जिसके कारण जाट समाज को काफी नुक्सान उठाना पड़ रहा है। जाट समाज के हितों के लिए कार्य करने वाले बहुत से जाट संगठन तथा खाप संगठन आस्तित्व में है परन्तु ये जाट समाज के विकास में उतनी सरकारात्मक भूमिका नही निभा रहे है, जितनी की उन्हें निभानी चाहिये। अतः वर्तमान समय में जात समाज अपनी संस्कृति, मानमर्यादा, ईमानदारी तथा सदाचार का आरक्षण करते हुए विकास के शिखर पर कैसे पहुंचे यह एक विचारणीय प्रश्न है। जाट समाज के विकास में जाट समाज के सभी वर्गों को इसके लिए ईमानदारी से मेहनत करने व सहयोग देने की आवश्यकता है जिसके लिए कुछ सुझाव निम्न प्रकार से है :–

1. किसी भी कार्य की सफलता के लिए उस कार्य के विषय में ज्ञान की सख्त आवश्यकता होती है यदि हमें उस कार्य का व्यवहारिक ज्ञान नहीं होगा तो हमें उस कार्य में असफलता का सामना करना पड़ेगा। इसलिए जाट समाज के विकास के लिए शिक्षा रूपी ज्ञान का होना अति आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक जाट परिवार को चाहिये कि वह अपने बच्चों को उच्च व व्यवहारिक शिक्षा दिलवाने के लिए कोई कसर न छोडें तथा बच्चों को शिक्षा दिलवाने के साथ–साथ बच्चों को बचपन से ही संस्कारी, मेहनती, सदाचारी, ईमानदारी देश प्रेमी बनाने के लिए उन्हें शिक्षित करें ताकि बच्चे बड़े होकर अपने परिवार, समाज तथा देश का गौरव बढ़ा सके।

2. जाट समाज के कल्याण का कार्य करने हेतु बहुत से जाट संगठन बने हुए है जो कि जाटों के कल्याण हेतु कार्य करने का दम्भ भरते है परन्तु इनमें से अधिकतर संगठन व जाट सभायें जाटों के कल्याण कार्यों के नाम पर सम्मेलन तथा सभायें ही करती है तथा वहां पर संगठनों के नेता अपने–अपने सुझाव देकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कर लेते हैं परन्तु उन संगठनों के नेता वकार्यकर्ता जाट समाज के लोगों के बीच जाकर सामज कल्याण के कार्यों को व्यवहारिक रूप नहीं देते है। जिसके कारण ये जाट संगठन निष्क्रीय होकर रह गये है तथा जाट समाज का आम व्यकित इन संगठनों को राजनीति करने वाली संस्थाये मानता है। अतः जाट संगठनों को चाहिये कि वे जाट समाज के विकास के लिए जाटों में शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, परिवारिक, दुश्मनी, सभ्य भाषा तथा नैतिक आचारण, जैसे विषयों पर जागृति लाने के लिए ग्राम स्तर पर अपने संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा जागृति अभियान चलाये ताकि जाट समाज जागृत होकर विकास के रास्ते पर अग्रसर हो सके।

3. जाट समाज के गामीण आंचलों में इस समाज की बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता इसकी खाप/पाल/पट्टी व्यवस्था है। इस खाप प्रणाली का गठन आज समाज के सामाजिक विवादों का समाधान पंचायती ढंग से करने के लिए तथा सामाजिक कुरीतियों

पर प्रतिबंध लगाने के लिए किया गया था परन्तु वर्तमान समय में ये खाप पंचायतें अपने नाम को पूरी तरह सार्थक नहीं कर पा रही है तथा ऐसा लगता है जैसे ये संस्थायें अपने मूल उद्देश्य से भटक गई है। पिछले कुछ वर्षों में कई खाप पंचायतों ने समगौत्र/संगांव विवाह के प्रकरणों में ऐसे फैसले सुनाये थे जिसके कारण इन्हें काफी आलोचना का सामना करना पड़ा था जिससे जाट समाज विकासशील छवि को काफी धक्का लगा है। यह सही है खाप पंचायतों के आयोजन का मूल उद्देश्य समाज के लोगों के नैतिक आचरण को बचाने तथा विवादों को निपटाने का होता है परन्तु इस सम्बन्ध में खाप पंचायतों को चाहिये कि ऐसे प्रकरणों में कानून के दायरे में रहकर सभी पक्षों की बात सुनकर तार्किक आधार पर फैसला करें ताकि ऐसे निर्णयों से किसी भी व्यक्ति या परिवार को जान माल का नुक्सान ना उठाना पड़े। खाप संगठनों के कार्यों को अधिक बेहतर बनाने के लिए अच्छा होगा कि खाप संगठनों में समाज के चौधरियों के साथ–साथ समाज के बुद्धिजीवों तथा समाज की महिलाओं को भी शामिल किया जाये। इसके अतिरिक्त खाप संगठनों को चाहिये कि वे सामाजिक विवादों के निपटान के साथ–साथ ग्राम स्तर पर कन्याओं को उच्च शिक्षा दिलवाने, कन्याओं को निःशुल्क कोचिंग दिलवाने, कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम व सामाजिक कुरीतियों पर प्रतिबन्ध लगाने जैसे कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर कराने के लिए जोरदार तरीके से अभियान चलाये ताकि जाट समाज विकास की गति पकड़ सके।

4. जाट समाज पत्र विकास के लिए जाटों को जागृत करने के लिए जाट समाज की पत्रिकाएं तथा पत्र बहुत ही सार्थक भूमिका निभा सकते है। इन पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से जाटों को सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ, कन्याओं की शिक्षा दिलवाने, खाप संगठनों की सार्थक भूमिका तथा जाटों में एकता लाने जैसे विषयों पर जाट समाज को जागृत किया जा सकता है। इस समय जाट समाज से सम्बन्धित करीब 15 पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है जोकि काफी कम है जाट समाज की जनसंख्या व क्षेत्र को देखते हुए कम से कम 50 पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशित की जाने की आवश्यकता है। जाट बहुल प्रत्येक जिले से कम से कम एक पत्र–पत्रिका प्रकाशित की जाये तो समाज हित में एक सार्थक प्रयास होगा। वर्तमान समय में जाट समाज की पत्र/पत्रिकाओं के अधिकाधिक प्रचार व प्रसार की आवश्यकता है। प्रत्येक जाट परिवार को चाहियें कि वह कम से कम एक पत्रिका का सदस्य अवश्य बने। वर्तमान समय में जाट समाज से सम्बधित प्रकाशित होने वाली पत्र/पत्रिकाओं के सम्पादकों को भी चाहियें कि वह इन पत्रिकाओं में जाट इतिहास के साथ–साथ जाट समाज की व्यवहारिक समस्याओं के निवारण, जाटों को सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागृत करने, कन्या भ्रूण हत्या के दुष्परिणामों, बच्चों को उच्च, नैतिक तथा तकनकी शिक्षा दिलवाने के लिए जाट समाज को जागृत व प्रेरित करने वाले लेखों को प्रमुखता से प्रकाशित करे ताकि जाट समाज का सम्पूर्ण विकास हो सके।

5. जाट समाज के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात कि है कि जाटों के बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके। जाटों को 90 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है परन्तु गांवों में अच्छी शिक्षण संस्थाओं व कोंचिंग सैन्टरों की कमी है। जिसके कारण जाटों के बच्चे उच्च तथा अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। तथा आगे चलकर वं प्रतियोगी परीक्षाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाते है जिसका जाट समाज के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जाट समाज की इस समस्या को दूर करने में जाट समाज के सेवानिवृत प्राध्यापक व अध्यापक महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। यदि जाट समाज का यह वर्ग समाज सेवा के अन्तर्गत ग्रामीण स्तर पर जाट बच्चों को निःशुल्क कोचिंग तथा मार्गदर्शन उपलब्ध करवाये तो यह इनकी जाट समाज के लिए बहुत बड़ी सेवा होगी। निःशुल्क कोच्रिंग का लाभ उठाकर गांवों में निवास करने वाले जाट समाज के बच्चे प्रतियोगी परीक्षाओं में शानदार सफलता प्राप्त कर सकते हैं तथा भविष्य में जाट समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। अतः यदि जाट समाज का सेवानिवृत वर्ग अपने अनुभव से प्राप्त ज्ञान का जाट समाज के विकास में सहयोग करे तो जाट समाज का विकास तीव्र गति से हो सकेगा।

6. जाट समाज को जागृत करने, जाट संस्कृति का प्रचार प्रसार करने व ग्राम स्तर पर अच्छी शिक्षण संस्थाएं स्थापित करने में जाट समाज को समृद्ध व धनवान वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जाट समाज का यह वर्ग यदि गांवों में उच्च शिक्षण संस्थान स्थापित करे तो जाट समाज के बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करके जाट समाज के विकास की बुनियाद बन सकेगे। जाट समाज का समृद्ध वर्ग यदि जाटों में जागरूकता लाने व जाट संस्कृति का प्रचार प्रसार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों का प्रकाशन करके जाटों के बारे में फैली भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास करे तो जाट समाज की स्पष्ट व सभ्य छवि समस्त समाज के सामने आ सकती है जोकि जाट समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जाट संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए यदि जाट समाज का सम्पन्न वर्ग टी.वी. चैनल शुरू करे तो उसके माध्यम से जाट समाज की संस्कृति का सार्थ पक्ष लोगों के सामने आयेगा इस सम्बन्ध में श्री हरिन्द्र मलिक का टी.वी. चैनल ऐ–वन तहलका हरियाणा में प्रंशसनीय कार्य कर रहा है।

7. जाट समाज के विकास में सबसे महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली भूमिका प्रत्येक जाट परिवार निभा सकता है। जाटों के कल्याण हेतु बहुत से जाट संगठन बने हुए है परन्तु इनकी वित्तीय स्थिति कमजोर होने के कारण ये जाट समाज के विकास कार्यों के क्रियान्वन में सक्रीय व प्रभावशाली भूमिका नहीं निभा पाते है। कोई भी संस्था या संगठन वित्त के बिना नहीं चल सकती है इसके लिए प्रत्येक जाट परिवार को चाहिए कि जाट समाज के हित में किसी न किसी जाट संगठन से अवश्यक जुड़े तथा प्रत्येक मास अपने सार्मथ्य अनुसार उस संगठन का धन व श्रम से सहयोग करे ताकि जाट संगठन जाट समाज के विकास में सक्रीय भूमिका निभा सकें।

जाट समाज के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देने का कर्तव्य प्रत्येक जाट का है प्रत्येक जाट को चाहिये कि वह अपने समाज तथा बच्चों को शिक्षित, संस्कृति, मेहनती, चरित्रवान तथा विकासशील बनाने के लिए समस्त बुराईयों का त्याग करे व कठोर भाषा, क्रोध व अंहकार पर नियन्त्रण रखकर समस्त समाज के लिए आदर्श स्थापित करे ताकि जाट समाज उससे प्रेरणा लेकर विकास की सफलता प्राप्त करे।

lekt lq/kkj ,oa tu psruk vfHk;ku

Mk- Kku izdk'k fiykfu;k ¼lkaln½

शिक्षा–संत स्वामी केशवानन्द की मान्यता थी कि यदि ग्राम्य समाज को उन्नति की दौड़ में पिछड़ने से बचाना है तो सर्वप्रथम शिक्षा का प्रचार एवं निरक्षता का उन्मूलन करना होगा। तदुपरान्त, समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त करना होगा। उन्होंने अपना समस्त जीवन शिक्षा प्रचार एवं समाज सुधार में लगाकर गांववासियों को सही रास्ता दिखाया। सामाजिक न्याय के समर्थक के रूप में स्वामी केशवानन्द ने आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के उत्थान–उद्धार का कार्य किया। उन्होंने रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा नशा–सेवन, दहेज प्रथा, मौसर, अस्पश्श्यता जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध मरूक्षेत्र के मुक्ति के शक्तिशाली आंदोलन को आगे बढ़ाया। आज आवश्यकता है स्वयं जागरण की, समाज सुधार की एवं राष्ट्र निर्माण की। समग्र विकास के तीन चरण हैं– मनुष्य, परिवार और समाज। खुद सुधरो और समाज को सुधारो। खुद बदलो और समाज में नई चेतना लाओ।

केन्द्र में आरक्षण का लाभ तब ही मिल सकता है जब जाट का कोई बेटा–बेटी अनपढ़–अशिक्षित न रहे। शिक्षा की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जाए। अतः सर्वप्रथम, समाज में 'अशिक्षा मुक्ति अभियान' का आगाज हो। बालिका–शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए। 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' का नारा बुलंद हो। भ्रूण–हत्या पर अंकुश लगे। राष्ट्र में कन्या भ्रूण हत्या से लिंगानुपात में असंतुलन आया है। भारत में सबसे कम लिंगानुपात (1000 पुरूषों पर 877 महिलाएं) वाले राज्य हरियाणा में दुल्हन न मिलने के कारण कई युवक कुंवारे हैं।

आज हमारे देश का ग्रामीण अंचल, सामाजिक कुरीतियों एवं व्यसनों के कारण, आगे बढ़ते हुए शेष संसार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में अपने को अक्षम पा रहा है। झूठी प्रतिष्ठा, तड़क–भड़क, शानो–शौकत के लिए अपव्यय से ग्रसित सामाजिक परंपराएं, मान्यताएं एवं संस्कार समाज के लिए अभिशाप हैं। आज की महत्ती आवश्यकता है– समाज सुधार यज्ञ। स्वामी केशवानन्द इस यज्ञ के पुरोहित थे। उन्होंने गांव के कल्याण और उन्नति के लिए पांच सूत्री मंत्र के रूप में समाज–सुधार कार्यक्रम, ग्रामोत्थान का पंचशील, प्रचारित किया। ग्रामोत्थान के पंचशील कार्यक्रम के पांच सूत्री मंत्र हैंः–

1. जन्मोत्सव शोधन :–

(क) जन्मोत्सव की पावन बेला पर, छूछक सिरधोवन आदि रीति–रिवाज के माध्यम से दिखावे, प्रतिष्ठा एवं अहभाव के पोषण का अवसर बनाकर किसी प्रकार का लेन–देन न किया जाए।

(ख) शुभ अवसर पर परोपकार हेतु दान किया जाए।

2. विवाहोत्सव सुधार :–

(क) बाल विवाह, अनमेल विवाह न किया जाए।

(ख) बारात में अधिकतम 25 व्यक्ति हों।

(ग) विवाहोत्सव यथा संभव दिन में किया जाए, जिससे बिजली व रोशनी का अपव्यय बच सके।

(घ) बैंड–डीजे पर अपव्यय से बचें।

(च) टैंट, क्राकरी पर यथासंभवद कम खर्च किया जाए।

(छ) किसी भी रूप में दहेज का लेना व देना पूर्णतः निशिद्ध हो। विवाहोत्सव पर केवल एक रुपया और नारियल मंगल प्रतीक के रूप में दे दिया जाए। टीका, शगुन, सुमठनी एवं अन्य रिवाज रस्म के बहाने किसी प्रकार का लेन–देन नहीं किया जाए। दुल्हन ही दहेज है।

3. मृत्यु भोज निवारण :–

(क) मृत्यु के दुखद अवसर पर शोक संतप्त वातावरण में मृत्युभोज तथा मौसर का कोई औचित्य नहीं है। शोकाकुल परिवार से मृत्यु भोज के नाम पर दुराग्रह पर मिष्ठान एवं पकवान का आयोजन सर्वथा अनुचित है। अतः मृत्युभोज पूर्णत बंद किया जाए।

(ख) शोकाकुल संबंधियों से किसी प्रकार की ओढ़ावनी या पहरावनी न ली जाए।

(ग) दिवंगत आत्मा की पुण्य स्मृति में दान दिया जाए।

4. नशा मुक्ति अभियान :–

यह निर्विवाद है कि समाज के लिए मदिरापान से घातक कोई अन्य व्यसन नहीं है। शराब की लत ने लाखों परिवारों को बर्बाद कर दिया है। ग्रामीण समाज को इस पिशाच की जकड़ से बचाने के लिए पूज्य स्वामीजी महाराज निरंतर संघर्ष करते रहे। आधुनिक समाज में मदिरापान के साथ अन्य नशीले पदार्थ (गांजा, अफीम, गुटका, स्मैक, हीरोइन आदि) के सेवन से नैतिक पतन, मानवीय मूल्यों का ह्रास बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। धूम्रपान (बीड़ी, सिगरेट व हुक्का) तम्बाकू का किसी भी रूप से सेवन (जर्दा खाना, नसवार सूंघना, पान मसाला) स्वास्थ्य के लिए घातक है। प्रत्येक धर्म भी इन व्यसनों का निषेध करता है।

5. मुकदमेंबाजी मुक्ति अभियान :–

ग्रामीण अंचल में आपस में लड़ाई, झगड़ों, मनमुटावों, दीवानी एवं फौजदारी मुकदमों के कारण धान का भारी अपव्यय एवं शक्ति का दुरूपयोग होता है। आपसी मुकदमेबाजी के कारण जमीनें बिक जाती हैं और खानदान बर्बाद हो जाते हैं। अतः यह अनिवार्य है कि हर प्रकार के आपसी झगड़े बिना थानों एवं अदालतों की शरण में जाए हुए गांवों में ही पंच फैसले के द्वारा समझौते से निपटाए जाएं।

चेतना की मशाल जले :–

पांच सूत्री कार्यक्रम की यह छोटी शुरूआत समाज को सदियों तक स्वस्थ रखने की ताकत देगी। इस कार्यक्रम को गांवों में घर–घर पहुंचाने और लागू करने का संयुक्त दायित्व बुद्धिजीवियों, गांव के मुखियाओं और विशेषकर शिक्षित युवा पीढ़ी पर है। समाज सुधार हेतु परंपरागत अनुभव और दृष्टिकोण के समीकरण की आवश्यकता है। स्वयं अपनी, अपने परिवार की एवं ग्रामीण समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए हम स्वयं अपने जीवन में, एवं परिवार में सामाजिक क्रांति के उपरोक्त कार्यक्रम को अपनाएं तथा इस क्रांति के संदेश को जन–जन तक पहुंचाए, जिसके लिए पूज्य स्वामीजी महाराज जीवन भर जूझते रहे। बड़े लोगों का अनुकरण किया जाता है, इस तथ्य को ध्यान में रखकर सम्पन्न व्यक्ति समाज की भलाई के लिये इस कार्यक्रम को अपनाए। गांव का पढ़ा लिखा प्रबुद्ध नौजवान वर्ग, इसकी सफलता में सहयोग दे। गांवों के उत्थान का बस यही राजमार्ग है। गांव–गांव, ढ़ाणी–ढ़ाणी चेतना की मशाल जले। खाप–पंचायतें, जिला–राज्य जाट महासभाएं, समाज सुधार के अभियान में, हरावल में रहें।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 28/5'4" B. Com. (Hons.) ICW Avoid Gotras: Dahiya, Nandal, Doon Cont.: 09872965962
- SM4 Jat Girl 25.6/5'3" PGT (Chemistry Lecturer) HES-II Preferred class I or II officer resident of Panchkula, Chandigarh & Mohali. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra Cont.: 09915805679
- SM4 Jat Girl 25.6/5'4" B.Tech. Electrical Communication Doing PGDCA Avoid Gotras: Khatri, Boora, Dhillon Cont.: 09419733198, 09417363623
- SM4 Jat Girl 23/5'8" M.A.Economics Avoid Gotras: Hooda, Malik Khatri Cont.: 09417529417
- SM4 Jat Girl 26/5'1" BA, JBT Working as Restorer in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Avoid Gotras: Dagar, Dalal, Suhag Cont.: 09812639204
- SM4 Jat Girl 26/5'3" NET, JRF Cleared, Pursuing PHD (M.Sc.) Avoid Gotras: Malik, Dhankhar, Kadyan Cont.: 09910164591, 09818478485
- SM4 Jat Girl 26.6/5'3" B. Tech. MBA Working in MNC Noida, Preferred NCR working Boy. Avoid Gotras: Dhankhar, Joon, Sangwan Cont.: 09213500435
- SM4 Jat Girl 27/5'5" Geologist/Scientist, M.Sc. Geology from Kurukshetra University. Working as Class-I Officer in Central Govt. at G.S.I. Dehradun. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee Cont.: 08950092430, 09416934251
- SM4 BDS Jat Girl 32/5'5" (divorced just after 2 months with mutual consent) .Employed as Dental Surgeon (Class-I Officer) in Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Mann Cont.: 09417383946
- SM4 Jat Girl 28/5'3" Double MA & B.Ed. J.B.T Employed as JBT Teacher in Haryana Government since 2011. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal Cont.: 09467671451
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl 22/5'3", B.A. J.B.T. , Avoid Gotra: Malic, Dalal, Dhanda, Cont.: 09467930255
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.Tech. Doing M. Tech. Avoid Gotra: Pawaria, Nandal, Ahlawat Cont.: 09811658557, 09289822077
- SM4 Jat Boy 31/5'7" B.Com, MBA, Asst. Manager in INC, 7.5 LPA, Avoid Gotra: Sangwan, Lamba, Sheoran Cont.: 9868565007
- SM4 Jat Boy 30/5'11" B.Tech, MBA, working in INFOSYS, Chandigarh 10.21 LPA, Avoid Gotra: Khatri, Gahlot, Dahiya Cont.: 9891261244
- SM4 Jat Boy 28½/5'11" B.Tech, officer RBI, 14 LPA, Avoid Gotra: Rana, Dahiya Cont.: 9009259791
- SM4 Jat Boy 29/5'8" MBA working MNC, Gurgoan as Asst. Manager, 6 LPA, Avoid Gotra: Dahiya, Dagar, Narwal Cont.: 9992558736
- SM4 Jat Boy 26/5'9" B.Tech, working MNC, Noida, 6.5 LPA, Avoid Gotra: Rana, Dhaka, Cont.: 9837324743
- SM4 Jat Girl 24/5'6" M.Com, NET JRF cleared, H.Test cleared, B.Ed, Avoid Gotra: Gill, Dangi, Gahlot, (Kharb not Direct) Cont.: 09466124612

नेतृत्व विहीन जाट समाज का कौन धनी?

लक्ष्मणराम महला

राजस्थान में ही नहीं पूरे भारत में जाट जाति नेतृत्व विहीन है। इसका कारण है जाटों में एकता एवं जातीय सम्मान का अभाव। जो जाट जाति सबसे उत्तम थी जिसका सारे विश्व में सामराज्य था, वही जाति आज अज्ञानता तथा अहं भाव में ऐसी जकड़ चुकी है, जिसका भगवान ही रखवाला है। आजादी में हजारों की तादाद में जाट पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों ने कुर्बानियां दी तथा आजादी के यज्ञ को अपने लहु से सींचा था। उसी जाति की आज आजादीके पश्चात् सबसे अधिक दुर्गति हो रही है। आजादी के पूर्व एवं पश्चात् जाटों में बड़े–बड़े लीडर, समाज सुधारक हुए थे, जाट समाज भी संगठित था, लेकिन ज्यों–ज्यों शिक्षा का प्रभाव बढ़ा लोग शिक्षित हो नौकरियां करने लगे, आर्थिक स्थिति सुधरने लगी त्यों–त्यों समाज का पतन शुरू हुआ। पढ़े–लिखे शिक्षित कहलाए जाने वाले लोगों में जातिय सोच धीरे–धीरे लुप्त होती चली गई और वे स्वयं के विकास में येन–केन–प्रकारेण लग गये, समाज का अगर पतन हो तो हो! जाट समाज में शिक्षित लोग अपने समाज के इतिहास से इतने दिग्भ्रमित हसे गये कि समाज के इतिहास को पढ़ना ही नही चाहते। आधा–अधुरा ज्ञान रखते हुए समाज विरोधी व्यक्ति की हां में हां जरूर मिला देंगें तथा जब भी एक दूसरे से मिलेंगें तो ऐसे बोलेगें की जैसे वे खुद तो समाज के प्रति समर्पित हैं तथा समाज को बड़ा महत्व देते हैं लेकिन और लोग समाज को डूबो रहे हैं। समाज की आलोचना करने में कसर नही छोड़ेंगे।

जाट समाज ने आजादी के पश्चात् शिक्षा, खेती, सेना, खेल क्षेत्र में भारी उन्नति की, आर्थिक स्थिति भी सुधरी लेकिन वह रही केवल व्यक्ति विशेष तक। अपना स्वयं का विकास किया। एक बाप के पांच लड़कों में से बाप ने अपना पेट काट कर मजदूरी करके विशेष परिस्थितियों में एक को पढ़ाया वह नौकरी लगा, नौकरी लगते ही परिवार को छोड़ अलग रहने लगा। चार भाईयों से आर्थिक क्षेत्र में आगे निकल गया, उसके बच्चों की तरफ उसका ध्यान कभी नहीं गया, जिससे समाज परिवार पिछड़ता गया। उसने अपने आपको भाईयों से एवं समाज से ऊँचा माना तथा अपने रिश्ते–नाते उच्च तथा भाईयों के निम्न माने। यही सोच धीरे–धीरे समाज को खोखला करती गई और एक दूसरे मे मनमुटाव बढ़ता गया तथा गैरों को फूट डालने का मौका मिल गया। जो लोग शहरों, कस्बों में बस गये उनकी बजाय गांवों में बसने वाले केवल खेती पर निर्भर हो आर्थिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में पिछड़ गये। यही असमानता धीरे–धीरे समाज को खोखला करती आई। प्रदेश में 57 हजार प्रोफेसर हैं जिनमें 25 हजार के करीब जाट हैं। यही शिक्षकों का रेशो है लेकिन एक प्रतिशत भी अगर समाज के प्रति सोचें तो समाज की कायापलट हो सकती है।

समाज में राजनीति करने वाले लोगों का हाल तो और भी बुरा हो गया। इनमें इतनी कुटिलता पैदा हो गई कि वे हर जीवन भर राजनीति के धुरन्धर रहें, तथा समाज को आपस में लड़ाते–भिड़ाते रहें, मेरे से कोई आगे न निकल सके, मेरे वर्चस्व को कोई चैलेंज नहीं करें, अगर करें तो उसका हर प्रकार से चाहे समाज डूबे तो डूबे लेकिन वह बरबाद हो जाये। यह स्थिति है जाटों में राजनीति का चश्का लगना बड़ा कारण रहा है। दूसरी जातियों में जाटों के प्रति इतना भारी जहर पैदा कर दिया कि वे लोग जाट के नाम से सारे एक हो जायेंगें, लेकिन बेचारे जाटों को तो इससे कोई लेना देना नहीं है। अपने स्वार्थ बस पंच, सरपंच, प्रधान, प्रमुख की लालसा में जातीय समीकरण बिगाड़ने में दूसरों के साथ हाथ मिलाकर पटकनी देने में ही अपना हित समझता है। जाट समाज का व्यक्ति जिस प्रकार बपने आप को बड़ा विद्वान समझदार मानते हुए दूसरे को नासमझ मानता है। मारवाड़ी में कहावत है कि "मर्‌या पंडिया ले डूब्या जजमान" हम सब तो बरबाद होंगें लेकिन समाज को भी मजा चखा देंगे।

जाटों में सामाजिक संगठन भी नाम मात्र के है, वे भी मृत प्रायः है। संगठन के नाम पर स्वयंभू लोग संगठनों में कब्जा जमाये बैठे हैं, इनका भी समाज के प्रति कोई विशेष लगाव नहीं है। ये लोग भी समाज को कोई दिशा नहीं दे पाये तथा जमावड़ा करके अपनी–अपनी दुकान चला रहे हैं। अपने स्वार्थ हित समाज को बेचते भी रहते है। आज की तारीख में जाट समाज की संगठनिक संस्थाओं में कोई विधिवत चुना हुआ व्यक्ति नहीं है। यह समाज का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि जो लोग जमे हुए बैठे है उनकी जय – जयकार करने वाले खेमों में बंटे बैठें हैं। कोई आयोजन आदि होता है तो अपने–अपने खेमों के हिसाब से लोग उन्हें बुलाते हैं, उनको माला पहनाने की होड़ में आयोजन के उद्देश्य को ही भूल जाते हैं उन्ही का गुणगान कर इतिश्री मान लेते हैं। जो व्यक्ति समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखता हैं, उन्हें ये स्वयंभू उस स्टेज पर पैर तक नहीं रखने देते हैं। अब आप बतायें आपके समाज का उत्थान एवं नेतृत्व कैसे बने? आरक्षण के समय समाज में जागृति एवं नेतृत्व उभरा था वह भी राजनीति की भेंट चढ़ गया। जाट समाज आज की स्थिति में न घर का है न ही घाट का रहा है। जिस व्यक्ति का सामाजिक संगठनों के स्वयंभू नेताओं से मनमुटाव हुआ तो उसने भी 10–20 को साथ लेकर नई सामाजिक दुकान खोल ली। सामाजिक संगठनों के पास न नीति है, न

विचार है और नहीं संगठन चलाने वाले गुणों के कार्यकर्त्ता है। संगठन चलाना व अखबार निकालना हाथी को खूंटे बाधने के बराबर है। संगठन वही चला सकता है जिसमें संगठनिक शक्ति, चरित्र, त्याग सामाजिक भावना, घर के प्रति मोह भंग, ईमानदारी, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता, धैर्यवान, अंहकार रहित हो।

जाट समाज के राजनेता चुनाव तो लड़ना चाहते हैं जाटों की बहुसंख्या हो वहां से तथा जाटों को महत्व देते है कम। समाज की गोष्ठियों आदि में भाषण झाड़ते हैं कि हमें जातिवादी विचारधारा अच्छी नहीं लगती है। इन्हीं जाटों संतों ने जाटों का बेड़ा गर्क कर दिया तथा समाज को नीचे धरातल पर ला पटका। जाट नेता एवं जाट कर्मचारी कभी भी हमारे जातीय बंधुओं को कोई महत्व नहीं देते हैं। काम के समय ये आदर्श छांटेंगे तथा कानून की बात करेंगे। जब ये व्यक्ति अपने पदों से हट जाते हे। तब इनमें अनायास ही सामाजिक भाव उमड़ आते हैं तब उनके पास कुछ होता नहीं है। ऐसे ही व्यक्ति समाज के मुखिया बनने की कोशिश करते हैं तो लोग उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब आप ही सोचिए कैसे हो हमारा उद्धार ? शिक्षित लोग जो सेवा से रिटायर्ड हो गये वे तो लम्बी तंगोटी तानकर सो गये उन्हें तो समाज के प्रति कोई लेन–देन ही नहीं है। जब उनसे मिलेंगें तो बड़े मार्मिक ज्ञान भरे भाषण झाड़ देंगे–क्या होनी जानी है, इस समाज के लोगों में एकता नहीं है। यह एकता कौन करेगा? सवाल उठता है क्या आप एकता को मानते हैं? तो जुटते क्यों नहीं? क्या मेरे पास तो समय ही नहीं है? सोचो कैसे जागृति आएगी, कौन लायेगा? ऐसे मर्दों के सहारे कौम को सम्बल कैसे मिलेगा?

दीनबंधु सर छोटूराम,, चौधरी चरणसिंह, चौधरी कुम्भारम आर्य, नाथूराम मिर्धा, किसान केसरी बलदेव राम मिर्धा, स्वामी गोपालदास, स्वामी केशवानन्द, बहादुरसिंह भोमिया, हरिश्चन्द नैण, नित्यानंद पूनिया शिक्षा संत, करमरेड घासीराम, सरदार हरलालसिंह, हनुमानसिंह बाडानिया, दौलतराम सारण, रूपाराम मान, अमीलाल पूनियां, रामदीन ढुकिया, मालसिंह मिनख, चौधरी मूलचन्द सिंहाग नागौर, बाबू गुल्लाराम रतकुड़िया, चौधरी भींवाराम सिहाग परबतसर, ठाकुर देशराज भरतपुर, प्रोफेसर घासीराम वर्मा, कुंवर नेतारामसिंह गौरीर, वीर तेजाजी, वीर बिग्गाजी, संत शिरोमणी फूलाबाई, भक्त शिरामणी करमा बाई, भक्त शिरोमणी राना बाई, राजा महेन्द्र प्रताप जैसे अनेकों वीरों, शहीदों, विरांगनाओं के कारण जिन्होंने अपना सब कुछ लुटाकर इस जाट समाज के लिए त्याग किया तथा समाज को इस स्टेज पर पहुंचाया। उनके बिना हमारा आज जो अस्तित्व है वह नहीं होता और हम क्या पता कैसी जिन्दगी जीते? आजादी के पश्चात् राजस्थान की विषम एवं विकट परिस्थितियों को देखते हुए सचमुच में उस समय यह एक ''शांतिमय, अहिंसक क्रान्ति'' थी, जिसमें भूमि के स्वामित्व का सत्ता परिवर्तन हुआ था। जहां पहले जमीन के मालिक राजा, महाराजा और जगीरदार थे, उनका अब कहीं अता–पता नहीं था और किसान जो शोषित, दीनहीन और अर्द्धदास सा था, अब स्वयं जमीन का मालिक था। हालांकी इस दौरान किसानों विशेषकर जाटों को सबसे ज्यादा जान–माल का नुकसान उठाना पड़ा था। जागीरदारों और डाकुओं ने किसानों को मारने तथा उन्हें नुकसान पहुंचाने में कोई संकोच नहीं किया था। इन डाकुओं का अंत किया था अमर शहीद एस.पी. ताराचन्द सारण ने और जमीन का मालिक बनाया चौधरी कुम्भाराम आर्य ने टिनेनसी एक्ट लाकर। जाटों को पढ़ने का अधिकार नहीं था, वहां स्वामी गोपालदास, चौधरी बहादुरसिंह भोमिया संगरिया, चौधरी हरीशचन्द्र नैण, स्वामी केशवानन्द, चौधरी रूपाराम मान, नित्यानन्द पूनियां, चौधरी जीवणराम कड़वासरा दीनगढ़ एवं चौधरी जीवण राम पूनिया जैतपुरा, अमीलाल पूनियां सूरतपुरा, चौधरी रामदीन ढूकिया बाडमेर, दौलतराम सारण, मूलचन्द सिहाग नागौर, बाबू गुल्लाराम रतकुड़िया, चौधरी भींवराम सिहाग परबतसर, सूबेदार बीरबल सिंह कस्वां, चौधरी खेताराम बैनिवाल भादरा, चौधरी कामरेड घासीराम घासी का बास झुंझुनू आदि व्यक्तियों ने राजा–महाराजाओं एवं जागीरदारों के विरोध के बावजूद स्कूल खेल करके शिक्षा का उजाला फैलाया। लेकिन शिक्षा का उजाला होने के पश्चात् पतन अधिक, सुधार कम हुआ।

नेतृत्व विहिन समाज लावारिश के समान होता है। पंचायती नेतृत्व हमारा कल्याण नहीं कर सकता? नेतृत्व के अभाव में ही तो केन्द्र में जाट समाज का कोई कैबिनेट मंत्री नहीं है। ''कमजोर की लुगाई, सबकी भाभी'' वाली कहावत हो रही है। आज की परिस्थिति में जाट समाज को एक मंच पर लाने का महत्ती आवश्यकता है। बिखरे समाज की शक्ति इतिहास एवं नेतृत्व के अभाव में क्षीण हो चली है। हमारे समाज में बुराईयों ने जड़े जमा ली हैं, हमारे युवाओं को सबकुछ उपलब्ध होते हुए भी वह क्रिमिनल (अपराध) प्रवृत्ति की और बढ़ रहा है। जिसके लिए एक ऐसा संगठन जो सबकी दुकानें बदं कर एक दुकान बने। संगठन की दुकान में खाली पीपी (मुंह देख टीका करने की) की बजाय कर्मठ, चरित्रवान व्यक्तियों के हाथों में बागडोर सौंपी जावे। प्रदेश से लेकर गांव तक संगठन खड़ाा करें जिससे सब लोग एक डोर में बंधे व समाज हित की सोच खड़ी करें। यही संगठन एक सबल राजनैतिक नेतृत्व पैदा करे। पाठकगण जरा इस पर विचार करें कि संगठन, सत्ता में हमारा योगदान तथा हमारे समाज में बढ़ती हुई अपराध प्रवृत्ति को कैसे रोका जा करके हमारे बच्चों को सुसंस्कारों में ढ़ाला जाये?

नोट :– पाठकगण अपने सुझाव, अपनी प्रतिक्रिया, सहयोग आदि के सम्बन्ध में **Email-jatkirtichuru@gmail.com** पर या मोबाइल नं० 9460673486 पर दें ताकि कोई अच्छी शुरूआत हो सके।

केवल कर्महीन ऐसे है जो भाग्य को कोसते है और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य है। – जवाहरलाल नेहरू

Book of Sanjay Baru

To,

The Editor,
Jat Lehar
Chandigarh

Dear Sir,

Kindly refer to the controversy on the book “Accidental Prime Minister” by Sanjay Baru, I have gone through whole of it and it is full of praise for Dr. Manmohan Singh except for certain paragraphs which depict him working under the thumb of the Congress President. Therefore the charge of Upender Kaur (daughter of The Prime Minister) against Mr. Baru for backstabbing does not carry much conviction. Unfortunately the media picked up only those very paragraphs to sensationalize the issue of working relationship between the PM and Congress President. It has resulted in irreparable damage to the persona of the Prime Minister on the one hand and sale of the book like hot cakes on the other. Otherwise the book hardly contains anything which people do not know already.

However the author made two cardinal mistakes in writing this book in view of the absolute trust reposed in him by the Prime Minister.

1. He did not show the draft of the book to the PM to seek his concurrence for publication of the book.
2. Had he titled the book-”A Gentleman Prime Minister” it would not have become the subject of big controversy.

The fact of the matter is that Dr. Manmohan Singh was never a good Prime Minister material and his rightful place was to teach in some reputed university. During his incumbency as Prime Minister, he devoted his maximum energy only in reading and clearing the routine files. He could have taken up some earth shaking projects (like construction of KESAO Dam across river Yamuna) without inviting any opposition either from the Congress President or the Left Parties. His incumbency has been like that of Calvin Coolridge, The US President in 1920 when her economy was in full bloom. But the US economy started crashing soon after he left the office because he failed to stich the fault lines of economy because of his indecisive habits. Like Dr. Manmohan Singh, he was nicknamed as Calvin Cool as he rarely spoke in the public or Senate on burning issues facing the country.

Kindly publish this letter in the columns of your esteemed magazine

Yours Sincerely,
Ram Niwas Malik
Engineer-in-Chief (Retd.)
E1/5, Gurgaon.
Mob.: 9911078502.

हमें जिन पर गर्व है

Leeza Malik D/O Sh. Satyapal Malik has passed her B.E. (Civil Engineering) from Panjab University, Chandigarh with Hons. She has been a Gold Medalist in her stream and has secured 85.12% marks. Recently she has been awarded University Gold Medal along with Degree Certificate for standing first in all the semester examinations. Presently she is pursuing her M.Tech (Transportation Engineering) from IIT Delhi.

Jat Sabha Chandigarh extend its heartiest congratulations on her success and wish her all the best in future.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।